रिया का नन्हा द्वीप

Story idea: S Yamuna, M Gracy, M Jyotsnavi, B Sirisha, Kavitha, Nandhini, Prasanthi, Geetha and Harika
Concept: Pavitra Vasudevan, Jehanzeb Badliwala, Aplonia Topno and Lixina
Art and design: Reechik Banerjee
Editors: Pavitra Vasudevan and Kartik Shanker
Hindi Translation: Sumit Singh and Renju Prasad
Layout: Apna Kuruvilla

© 2025 by Dakshin Foundation and Andaman Nicobar Environment Team

Supporting partners: LGT Venture Philanthropy, Rainmatter Foundation and Rohini Nilekani Philanthropies

Copyrights

All content in this book unless otherwise noted, is licensed under a Creative Commons AttributionNonCommercial-
ShareAlike 4.0 International (CC BY-NC-SA 4.0)

The digital version of the book is available at www.dakshin.org

रिया का नन्हा द्वीप

प्राक्कथन

भारत के मुख्य भू-भाग की चहल-पहल से दूर, अंडमान द्वीप समूह का एक बेहद सुकून भरा शांत जीवन है, जहाँ हर कोने में कहानियाँ गूँजती हैं - जो सुनना चाहे, उनके लिए। इन्हीं द्वीपों के एक हिस्से में बसा है- जंगलीघाट, जो समंदर के पास पोर्ट ब्लेयर के बीचो-बीच एक चहल-पहल वाला मोहल्ला है। यहाँ की रोज़मर्रा की ज़िंदगी नावों के इंजनों की घरघराहट, मछुआरों की बातचीत,मछलियों और केंकड़ों की तीखी गंध से शुरू होती है।

एक मनोचिकित्सक होने के नाते, किस्से-कहानियाँ सुनना मुझे हमेशा से पसंद रहा है- वे कहानियाँ, जिन्हें हम सुनाते हैं, जिन्हें हम यादों में संजोए रखते हैं और वे जो बड़ी खामोशी से हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में आकर फैल जाती हैं। ऐसी ही कहानियों की तलाश में हमारी मुलाकात उत्सुकता भरी आँखों वाले बच्चों के एक ग्रुप से हुई, जो हमेशा हमें अपनी दुनिया के बारे में बताने और बाहरी दुनिया के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानने के लिए उत्सुक रहा करते थे। वे अपने स्कूल के दिनों के बारे में, अपने शौकों और कभी-कभी अपने मन के अंदर छिपे भय के बारे में बातें करते। हम उनकी रोज़मर्रा की खुशियों और उनकी कुछ गहरी भावनाओं को लेकर बातें करते।

इन्हीं बातचीत के बीच अपलोनिया, लिक्सिना और मैं चिंतामणि के किरदार से परिचित हुए, जिसका शाब्दिक मतलब एक चिंतित व्यक्ति होता है। आम तौर पर चिंतामणि से ऐसे व्यक्ति की छवि बनती है, जो हमेशा चिंता करता रहता है और फिर उसे दूर करने के लिए नए- नए तरीके खोजता रहता है। इस हालत को बेचैनी कहा जाता है। बेचैनी होने पर साधारण सा दिन भी भारी और थका- सा लगने लगता है।

दरअसल यह कहानी जंगलीघाट के बच्चों - एस यमुना, एम ग्रेसी, एम ज्योत्स्नवी, बी सिरिशा, कविता, नंदिनी, प्रशांति, गीता, हरिका, बी संतोष, के महेश, सी.एच. विनोद, एम दिनेश और कई दूसरे बच्चों के साथ हमारी मुलाकातों से शुरु होती है। कक्षा 2 से लेकर कॉलेज के विद्यार्थियों ने शिक्षक, पहलवान, सैनिक पुलिस ऑफ़िसर इत्यादि बनने के सपने बताए। उन्होंने क्रिकेट, योगा, टीवी देखने और कहानियाँ पढ़ने के प्रति अपने लगाव पर बात की।

यह कहानी हमें मन से सुनना, दूसरों के अनुभवों का सम्मान करना सिखाती है और बच्चों के उस खास ताकत को समझने का मौका देती है जिससे वे अपनी अनोखी दुनिया में जीते है, जो हमें हमेशा से आकर्षित करती रहती है। उनकी आवाज़ों और सपनों के साथ यह

पुस्तक आपको न केवल उन द्वीपों की यात्रा करने को आमंत्रित करती है, बल्कि चिंता और आश्चर्य के बीच उस नाज़ुक संतुलन का भी परिचय देती है, जो हम सभी में मौजूद रहता है। हमारे चारों ओर मौजूद प्राकृतिक दुनिया का सुकून। यह उन छिपी हुई दुनियाओं की कहानी है, जिन्हें बच्चे रचते हैं; उन दोस्तियों की, जो हमारे रास्ते रोशन करती हैं; और बेचैनी का साया घिर आने के बावजूद भी अपने अस्तित्व को साथ रखने की।

यहाँ जहांज़ेब का ज़िक्र करना ख़ासा अहम है, जो हमें प्यार और उम्मीद की राह पर फिर से ले चलता है। और मैं कार्तिक का भी ज़िक्र करती हूँ, जो हमें बड़े-बड़े सपने देखने और अपने काम और इन कहानियों से जुड़े रहने का तरीका सिखाते हैं।

पवित्रा वासुदेवन
सीनियर प्रोग्राम ऑफ़िसर, दक्षिण फ़ाउंडेशन एवं
मनोचिकित्सक

जेटी के पास खड़े एक चटक नीले-पीले घर में रिया अपनी अम्मा,
तथैय्या और अपने कुत्ते शेरू के साथ रहती थी।

शेरू और रिया अक्सर नौकाओं और मछुआरों की चहल-पहल वाली दुनिया की सैर करते। हवा में इंजनों की आवाज़, लोगों के चिल्लाहट और तट से टकराती लहरों के छपाके की आवाज़ भरी रहती।

हर दिन पकड़ी हुई ताज़ा मछलियों की ढेर को देखकर रिया की आँखें चमक उठतीं। जाल में छटपटाती एक बड़ी रुपहली मछली को देखकर वह चहककर कहती - “देख शेरू!” यह है अब तक की सबसे बड़ी मछली!” नाक सिकोड़ कर सहमति में शेरू भौंकता।

नन्ही रिया उत्सुकता से भरी हुई होती थी, यहाँ -वहाँ दौड़ते वक्त उसके काले बाल लहरा उठते। कभी-कभी वह तट पर उगे मैंग्रोव्स के बीच से होकर दौड़ती। नीले समंदर - कुलबुलाती मछलियाँ, इधर-उधर भागते कीचड़ के मकोड़े और समंदर के किनारे घूमते-भटकते केंकड़े, ये सभी उसे खूब लुभाते थे।

जब तब रिया वॉलीबॉल खेलते बच्चों के दल में शामिल हो जाती। “देखना, मैं आज बहुत ऊँची कूद लगाऊँगी!”- वह शेरू को कहती। अपनी पूरी ताकत के साथ वह हर संभव ऊँची छलांग लगाने की कोशिश करती। वह कहती - “देखना, मैं बिल्कुल सही सर्व दूँगी।”

मगर रिया को फ़िश-करी सबसे ज़्यादा पसंद थी, खासकर तब जब उसके तथैय्या मछली पकड़ने की लंबी यात्राओं में पकड़ी गई मछलियों से फ़िश-करी बनाते थे। “तथैय्या, क्या तुमने आज कोकारी पकड़ी?” रिया उत्साह से आँखें चौड़ी कर पूछती। रसोई में झाँकते हुए वह बेसब्री से पूछती - “क्या वह अब पक गई है?”

खाने के वक्त रिया खूब बातें करती और दिन भर के अपने कारनामे सुनाती। “और क्या आपको पता है, सबसे अच्छी बात क्या हुई! स्कूल की कुछ लड़कियों के साथ मैं वॉलीबॉल प्रैक्टिस के लिए जा रही हूँ। अपनी पूरी ताकत से कूदना और बॉल फ़ेंकना मुझे अच्छा लगता है।” शेरू रुक कर सुस्ताता रहता और उस दौरान रिया के हरेक शब्द पर वह अपने कान हिलाता रहता।

पर एक दिन तथैय्या ने गौर किया कि रिया ज़रा गुमसुम सी रहने लगी थी। “रिया, आज तुम चुप-चुप सी हो। क्या स्कूल में कुछ हुआ है?” रिया के लिए लंच का डब्बा भरते समय एक दिन तथैय्या ने उससे पूछा। “कुछ नहीं, तथैय्या”- वह बुदबुदाई। तभी वह अचानक से उठ खड़ी हुई और शेरू के साथ घर से बाहर भाग गई।

रिया जिस बात को समझा नहीं पा रही थी, वह थी उस बेचैनी का
साया जो हाल ही में उसके जीवन में छा गया था।

जब तक उसे कुछ समझ में आता, वह समंदर किनारे आ खड़ी हुई थी, उसका दिल बुरी तरह से धड़क रहा था। लगा जैसे कि वह फट जाएगी। वह चीखना चाहती थी—और जितनी ज़ोर से वह चीख सकती थी, उसने चीख मारी। उसकी आवाज़ से कीचड़ के मकोड़े और आवारा केकड़े अपने-अपने छेद में वापस घुस गए। उसके बाद वह रेत पर गिर पड़ी और पास खड़े शेरू से लिपटकर फूट-फूटकर रोने लगी।

उसे अभी भी कानों में भेदने वाली घंटी की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। “नाटी, मोटी! तुम खेलने के लिए फिट नहीं हो,” एक आवाज़ ने उसे अंदर तक चीर दिया। “अरे यह क्या किया? नेट में डालने की बजाए बॉल को पेड़ पर उछाल दिया?” दूसरे की हँसी सुनाई पड़ी। “तुम अपने कुत्ते के साथ समंदर तट पर ही रहने लायक हो। तुम इस टीम के लायक नहीं हो,” तीसरी ने चिढ़ाते हुए कहा। रिया ने अपने आँसू पोंछे और मन ही मन बुदबुदाई, “क्या मैं इतनी बुरी हूँ ? मुझे नहीं पता कि मैं दोबारा स्कूल जा पाऊँगी या वॉलीबॉल खेल पाऊँगी भी कि नहीं।” उसके दिलो-दिमाग में बेचैनी हावी होने लगी थी।

तभी अचानक, कीचड़ सने हाथों और प्यारी सी मुस्कान वाला एक लड़का कहीं से प्रकट हुआ। पेड़ों पर चढ़ते हुए या मैंग्रोव के बीच केकड़े पकड़ते हुए रिया ने उसे पहले भी देखा था। वह लड़का ज़रा अजीब-सा था, हमेशा अकेला घूमता-फिरता रहता था, बिल्कुल रिया की तरह। लड़के ने एक शब्द भी नहीं कहा। बल्कि उसने बड़ी सावधानी से रिया की ओर अभी-अभी पकड़ा हुआ एक केकड़ा बढ़ा दिया, उसकी आँखों में सहानुभूति की चमक थी।

रिया ने आँसुओं से भीगी पलकें झपकाईं और बिना सोचे-समझे उस केंकड़े के बदले लड़के को अपना लंच पैक पकड़ा दिया। यह एक अजीब-सा लेन-देन था, मगर इससे रिया को ज़रा हल्का महसूस हुआ। धीरे-धीरे आसमान में अंधेरा छाने लगा, रिया झटपट घर की ओर चल पड़ी, उसके मन में अभी भी कई सारे विचार उमड़-घुमड़ रहे थे।

अगली सुबह रिया जगी, मगर बेचैनी का असर अब भी उस पर हावी था। उसका पूरा दिन धुंधलका भरा लग रहा था। “शेरू, आज मैं स्कूल नहीं जाना चाहती,” धीरे से उसने कहा। आखिरकार, जिस दिन का उसे डर था, वह आ ही गया। आज स्कूल में टीम का सेलेक्शन होना था, और उसे अपने साथियों की ताने भरी आवाज़ें सुनाई पड़ने लगीं।

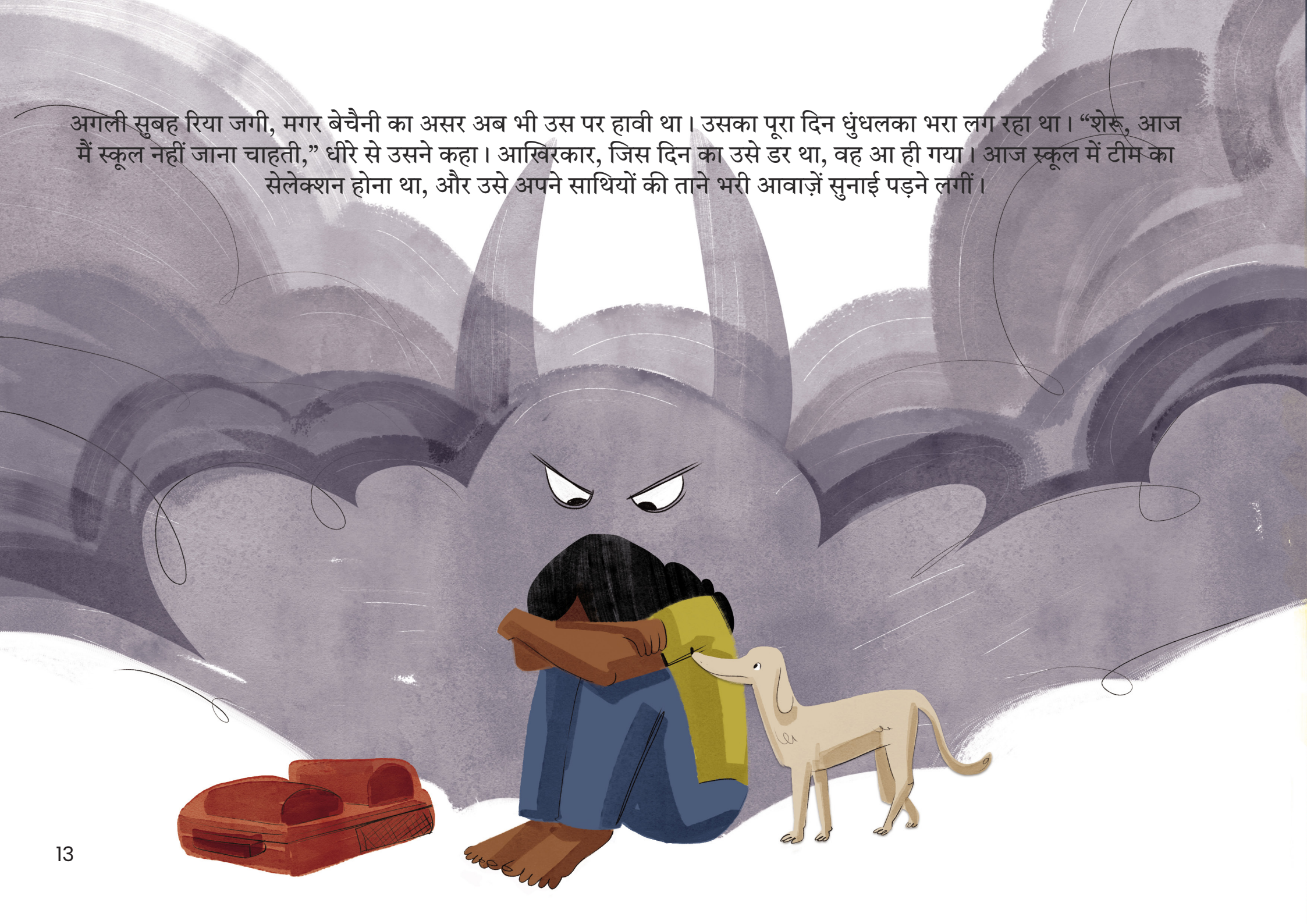

स्कूल में, “छोटी!” के ताने उसके दिलो-दिमाग में गूंजते रहते थे। उसने कोशिश तो भरपूर की, मगर टीम में जगह नहीं बना पाई। रिया का दिल टूट गया...वह समंदर तट पर मैंग्रोव की ओर भागी, उसकी आँखें गीली थीं। “मैं इतनी अच्छी क्यों नहीं हूँ ?” रोते हुए वह रेत पर बैठ गई, लहरों के थपेड़ों में उसकी आवाज़ कहीं खो-सी गई।

तभी वह लड़का फिर प्रकट हुआ, इस बार उसके हाथ रेत से सने हुए थे और उसकी मुस्कान गहरे अपनेपन से भरी थी। दोनों साथ-साथ लहरों के करीब गए, चट्टानों और उनके किनारों से झुककर नीचे की ओर झांकते-देखते रहे।

“उस पत्थर के नीचे देखो; कुछ चल रहा है!” रिया चिल्लाई। लड़के ने पास आकर फुसफुसाया, “अरे यह तो एक ब्रिट्ल स्टार है!” उसने चमकती चट्टान की ओर इशारा किया। “और देखो—वहाँ स्टारफ़िश। और यहाँ देखो एक कोरल!” उसने कोरल के किनारों को छूते हुए कहा।

उस अद्भुत दुनिया को देखकर रिया की आँखें खुली की खुली रह गईं। फिडलर क्रैब्स अजीबोगरीब तरह से नाच रहे थे, सीपियाँ चट्टानों से चिपकी हुई थीं, जिन पर छोटे-छोटे घोंघे और काइटन भी चिपके हुए खिसक रहे थे। घोंघे अपने रास्ते में चिपचिपी लकीरें छोड़ रहे थे और बार्नेकल्स पत्थरों पर सजावटी निशान बना रहे थे। सैंडपाइपर और प्लोवर अपनी छोटी नुकीली चोंच से नन्हे कीड़े-मकोड़ों का पीछा कर रहे थे।

रेत में उन्हें बैंडेड सी-करैत की नज़रों से सुरक्षित बचा अंडों का एक घोंसला भी मिल गया।

उस अनजानी दुनिया में दोनों इतने मशगूल थे कि उन्हें वॉलीबॉल के साथ बच्चों के आने की आहट भी नहीं सुनाई पड़ी। “रवि, क्या देख रहे हो?” उनमें से एक ने पुकारा। रवि मुड़ा, उसके चेहरे पर मुस्कराहट खिल उठी। “हम कुछ खूबसूरत, अनोखे समुद्री जीव देख रहे हैं!” रिया ने उस ग्रुप की ओर देखा, उनके हाथों में गेंद थी, और उनकी आँखों में उसके लिए आमंत्रण का भाव था। रिया ने हैरानी से शेरू की ओर देखा; उसे इसकी कतई भी उम्मीद नहीं थी। “शेरू, क्या उनके हाथों में वॉलीबॉल है?”

दूसरे बच्चों के पीछे-पीछे चलते हुए, वह तट के पास एक वॉलीबॉल कोर्ट पर पहुँच गई, जहाँ कुछ बच्चे, जो लंबे और छोटे कद के थे, एक साथ प्रैक्टिस कर रहे थे, हँस-बोल रहे थे और एक-दूसरे का हौसला बढ़ा रहे थे। पहले तो रिया ज़रा झिझकी, उसे थोड़ा डर लगा, मगर लड़के की मुस्कराहट ने उसे यकीन में बदल दिया। वह भी उनके साथ खेलने लगी, और जल्द ही वह भी उनके साथ हँसने-खिलखिलाने लगी। हर गेम और हर गुजरते दिन के साथ, उसके दिल में लगी गांठ ज़रा-ज़रा खुलती जा रही थी, और बेचैनी की वह परेशान कर देने वाली भावना धीरे-धीरे हवा होने लगी।

तथैय्या जब अपनी समंदर यात्रा से लौटे, तो रिया इंतज़ार न कर सकी। “तथैय्या, आपको यकीन नहीं होगा कि आपके जाने के बाद क्या-क्या हुआ! यह तो बिल्कुल अद्भुत बात है!” उसने उसे अपने स्कूल के दोस्तों द्वारा चिढ़ाए जाने, घर से भाग जाने, मैंग्रोव के पास समुद्र तट पर एक लड़के से दोस्ती होने और टीम सेलेक्शन के दौरान हुई बेचैनी ने उसे कैसा महसूस कराया, इन सब के बारे में बताया।

“यह तो बहुत कुछ हुआ है रिया, पर मैं चाहता हूँ कि तुम्हें इस बात का एहसास हो कि मुझे तुम पर गर्व है कि तुमने नए दोस्त बनाए और बेचैनी की वजह से हर बात पर शक पैदा होने के बावजूद भी तुम मज़बूती से खड़ी रही,” तथैय्या ने रिया को प्यार से सहलाते हुए कहा।

“मुझे अभी भी कभी-कभी बेचैनी का एहसास होता है तथैय्या, कभी बड़ी और डरावनी, तो कभी छोटी और कमज़ोर-सी, जिससे मुझमें डर और चिड़चिड़ाहट भर जाती है। और कभी-कभी तो दिल करता है कि मैं भाग जाऊँ,” उसने कहा, “मगर अब मैं जानती हूँ कि मैं अपने दोस्तों और शेरू के साथ खेलने जा सकती हूँ या रवि के साथ केकड़े पकड़ सकती हूँ।”

कुछ दिनों बाद रिया ने देखा कि दूसरे बच्चों के पास भी अपनी-अपनी बेचैनियाँ थीं। कुछ बड़ी थीं, कुछ छोटी; कुछ गुस्से से चिल्लाती थीं, तो कुछ डर के मारे सहमी रहती थीं।

लेकिन अब, वह और उसकी सहेलियाँ हमेशा साथ मिलकर समुद्र तट पर टहलते हुए केकड़े पकड़ती हैं और समुद्री जीवों की खोज करती हैं। और साथ मिलकर वे जैसे-जैसे एक नई दुनिया की परतों को खोलने लगते हैं, उनकी बेचैनी धीरे-धीरे कम होने लगती है।

दक्षिण फाउंडेशन का उद्देश्य संरक्षण व प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के बारे में जानकारी देना और उसका समर्थन करना है, साथ ही स्थिर आजीविका, सामाजिक विकास और पर्यावरणीय न्याय को बढ़ावा देना और उनका समर्थन करना है। हम भारत के तटीय, समुद्री और पर्वतीय पारिस्थितिक तंत्रों में संरक्षण व प्रबंधन हेतु पारिस्थितिक और सामाजिक रूप से उचित नज़रियों को बढ़ावा देने के लिए अपने अनुसंधान और प्रयासों में अंतर्विषयक दृष्टिकोण अपनाते हैं।

रिया की नन्ही दुनिया में आपका स्वागत है, एक दुनिया जिसमें जिज्ञासू आँखों वाली रिया, अपना दिन अपने कुत्ते- शेरू, अम्मा और तथैय्या के साथ बिताती है। उसकी दुनिया में द्वीपों की रोमांचकारी ज़िंदगी, वॉलीबॉल को लेकर उत्साह और उसकी पसंदीदा फ़िश-करी की झलकियाँ मिलती हैं। मगर बाद में, रिया को कुछ अलग-सा महसूस होने लगता है। तब उसकी ज़िंदगी में बेचैनी हावी हो जाता है और उसका आत्मविश्वास डगमगाने लगता है। स्कूल में जब ताने मारने की आवाज़ें बहुत तेज़ हो जाती हैं और वॉलीबॉल खेलने का उसका सपना अधूरा सा लगने लगता है, तब रिया के सामने केकड़ों और कौतुहल के ख़ामोश आदान-प्रदान से एक अनकही दोस्ती आकार लेती है। तो इस कहानी में रिया की नन्ही दुनिया की सैर कीजिए, भले ही बच्चे के दिल की बेचैनी हमें इसके विपरीत समझाने की कोशिश करे, पर यहाँ की अजनबी-अनजानी जगहों के हैरतअंगेज़ और सुकूनदेह लमहों में हिम्मत और हौसले पैदा होते दिखाई पड़ते हैं।

dakshin
ANET